शिव-पार्वती, राधे-कृष्ण और राम-सीता भी चकराये

कि नन्द-सविता की अद्भूत जोड़ी कलियुग में, कैसे आये ?

हम बनें तुम बनें एक दूजे के लिये

13सितंबर डा. नन्द किशोर शर्मा एवं डा. सविता शर्मा की 25वीं वर्षगांठ है। आज भी उन दोनों में परस्पर इतना प्रेम है मानो आज ही उनका विवाह हुआ हो। युगल प्रेमी जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में एक-दूसरे के साथ एक सच्चे मित्र की तरह कंधे से कंधा मिला कर कार्य करते हैं।

इस आदर्श दम्पति की ओर हजारों लोग बड़ी श्रद्धा और विश्वास से देखते हैं ताकि उनसे नयी प्रेरणा लेकर अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बना सके। यह स्वाभाविक भी है क्योंकि आज समाज में 'विवाह' की संस्था दिन प्रतिदिन कमजोर होती जा रही है। अधिकांश दम्पतियों में विवाह के तीन-चार वर्षो बाद आपस में कोई प्यार नहीं रह जाता। उनमें किसी-न-किसी बात पर झगड़ा चलता रहता है, कुछ का तो तलाक तक हो जाता है। ऐसे हालातों में 'शर्मा दम्पति' का प्यार भरा जीवन एक आनन्दमय आश्चर्य लगता है।

सभी दम्पति चाहते हैं कि यह आनन्दमय आश्चर्य उनके संबंधों में भी घटित हो। अतः इस अंक में हम आदरणीय डॉ. एन. के. शर्मा से उनके आनन्दमय दाम्पत्य जीवन के रहस्यों के बारे में उनके शिष्यों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों और उत्तरों को प्रस्तुत कर रहे हैं। अंत में हम पत्रिका परिवार की ओर से आदरणीय डॉ. एन. के. शर्मा और पूज्य डॉ. सविता शर्मा के स्वस्थ-सुखी एवं प्रेमपूर्ण दीर्घ जीवन के लिये परमशक्ति से प्रार्थना करते हैं कि वे हमें सदैव अपना अनमोल मार्गदर्शन प्रदान करते रहें!

--संपादक

सुखी दाम्पत्य जीवन की व्यवहारिक गीता

ऐसा कौन दम्पति होगा जो प्रेममय सुखी दाम्पत्य जीवन नहीं बिताना चाहता पर बिरले ही अपने लक्ष्य में सफल हो पाते हैं। यह जीवन की एक विचित्र विडम्बना और अद्भुत रहस्य है। इस रहस्य पर से पर्दा उठा रहे हैं सुखी और आदर्श दम्पति हमारे गुरुदेव डॉ. एन. के. शर्मा और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती डॉ. सविता शर्मा। आपकी पत्रिका द्वारा पूछे प्रश्नोंत्तरों को हम आपकी जानकारी के लिये यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। साक्षात्कार लिया है हिन्दी साहित्य जगत के लोकप्रिय लेखक सुरेन्द्रनाथ सक्सेना ने। 25 साल का लंबा दाम्पत्य जीवन जीकर डा. शर्मा दम्पति आज जो कुछ यहां कह रहे हैं वह निश्चय ही उनके गहरे अनुभवों का निचोड़ है और अनुकरणीय है।

प्रश्न : आप कहते रहे हैं कि स्त्री के सर्वांगीण विकास बिना समाज की उन्नति नहीं है। स्त्री के सर्वांगीण विकास से आपका क्या अर्थ है?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : इसका अर्थ यह है कि स्त्री की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति, कला और प्रतिभा को मान्यता दी जाये। उसको अपने व्यक्तित्व का विकास करने के लिये स्वतंत्रता, सुविधायें और सम्मान मिलना चाहिये। यदि ऐसा नहीं किया जायेगा तो नारी के व्यक्तित्व का विकास नहीं हो सकेगा। इसका प्रभाव उसकी संतान तथा परिवार पर पड़ेगा और फलस्वरूप पूरा समाज प्रभावित होगा, जिससे वह उन्नति नहीं कर पायेगा।

प्रश्न : दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी के प्रति आपसी प्रेम को बढ़ाने के लिये क्या करना चाहिए?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) :समाज स्त्री और पुरूष की दो शक्तियों से मिल कर निर्मित होता है। परिवार रूपी गाड़ी के दो पहिये हैं - स्त्री और पुरुष। दोनों का समान स्तर पर होना और समान गति से चलना परिवार की प्रगति के लिये आवश्यक है लेकिन समाज ने पुरुष रूपी पहिया बड़ा बना दिया और स्त्री का छोटा रहने दिया। इसके लिये बहुत हद तक पुरूष का अहंकार जिम्मेदार है। जब पुरुष स्त्री के संपूर्ण व्यक्तित्व को स्वीकार कर उसको खिलने देता है तभी उसके अन्दर प्रेम रूपी सुगंधि पैदा होती है। तभी दाम्पत्य जीवन में रस आता है। इसके विपरीत अगर पुरुष में अहंकार होगा तो प्रेम की संभावना ही नहीं है। अधिकांश पुरूष जो प्रेम करते नजर आते भी हैं, वह वास्तविक प्रेम न होकर अहंकार के विभिन्न स्वरूप हैं। **इस अर्थ में मेरी अपनी यह मान्यता है कि व्यक्ति जीवन भर प्रेम करे और मरते वक्त शादी करे।**

s ts Hj Ozs j Sh ir dr kn js D vk ej

प्रश्न : आपके इस कथन का वास्तविक अर्थ क्या है, कृपया विस्तार से बतायें।

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : असल में, समाज में आज शादी का अर्थ अधिपत्य (मालिकाना हक़) हो गया है और जब आप किसी के मालिक बन जाते हैं तो वह व्यक्ति, फिर व्यक्ति न रह कर एक वस्तु बन जाता है। और आप उसकी भावनाओं का सम्मान करना बंद कर देते हैं। यही कारण है कि शादी के पहले प्रेमी-प्रेमिका एक दूसरे का बहुत आदर करते हैं, उनके प्रति अधिक से अधिक प्रेम अनुभव करते हैं। स्वयं भी खूब बन-संवर कर श्रृंगार करके रहते हैं, एक दूसरे को अच्छे से अच्छे उपहार देते हैं। वे प्रयत्न करते हैं कि एक दूजे को सुन्दर से सुन्दरतम दिखें परन्तु शादी के बाद यह सब समाप्त हो जाता है क्योंकि प्रेम के प्रति उनका उत्साह मरता चला जाता है। शादी से पहले प्रेमिका के बाल सावन की घटा होते हैं, लेकिन शादी के बाद वही बाल अगर खाने में आ जाये तो बवाल

बन जाता है। स्त्री भी पत्नी बनने के बाद वह प्रेम और आदर नहीं दे पाती जो एक प्रेमिका के रूप में देती है क्योंकि वह प्रेमी की वास्तविकता से उसके असली स्वभाव, व्यवहार से परिचित होने लगती है। अब प्रेम के बजाय, मेरी मान्यता, मेरा विचार, मेरा स्वाद, मेरी पसंद, अपेक्षायें, हिसाब-किताब शुरू हो जाते हैं, और समझने लगती है कि अब उसको पति के बंधन से निकलना मुश्किल है। भय, मजबूरी, दमन, गुलामी, जबर्दस्ती, अधिपत्य (शासन) असमानता जैसे भावों के रहते पति-पत्नी के बीच प्रेम व आनंद का सवाल ही नहीं पैदा होता।

; ç f k d r h a a

दाम्पत्य जीवन में सच्चा मज़ा तब आता है जब शादी हो जाने के बाद भी पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका के रूप में जीवन भर रहें। विवाह से पहले वाला प्यार, सम्मान और आकर्षण बनाये रखें। यह मान कर चलें कि शादी एक बन्धन नहीं है वरन् वह एक अवसर है, एक लम्बी अवधि का अवसर जिसमें आपको अपने प्रेम को और अधिक विकसित करना है। लेकिन होता है इसका उल्टा-शादी से पहले तो प्रेमिका से बिछुड़ने का भय था लेकिन शादी होने के बाद स्त्री कानूनन बंध गई तो कहां जायेगी? स्त्री हथियाते ही प्रेमी का दृष्टिकोण और भाव खत्म होने लगता है, शासक का शुरू हो जाता है। शादी के पहले प्रेमिका के हिसाब से चलते थे, शादी के बाद प्रेमी अपनी प्रेमिका को एक शासक की तरह अपने हिसाब से चलाता है या ठीक इसका उल्टा भी।

आज स्थिति यह है कि शादी के बाद ज्यादातर मामलों में पति-पत्नी दोनों की कोशिश यह होती है कि वे दूसरे पर हावी हो जायें। **इसलिये शादी-विवाह में प्रेम की हत्या हो जाती है, क्योंकि जहां अहंकार और शासन होगा वहां प्रेम की सम्भावना ही नहीं हो सकती। इसलिये मैं ऐसा कहता हूं कि सामाजिक दृष्टि से विवाह की औपचारिकता पूरी करले, परन्तु जीवन भर प्रेम करने के बाद वास्तविक शादी करें।**

s ç k Zd a k s

k k h u d d k j hk H da k ou h

प्रश्न : आपके विचार से प्रेम का क्या अर्थ है?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : प्रेम का अर्थ है एक दूसरे के व्यक्तित्व को तथा उसके अच्छाईयों को भी और बुराईयों को भी स्वीकार करना और वहां चुनाव, अधिपत्य या शासन का प्रश्न ही नहीं पैदा होता क्योंकि उसमें प्रेम की हत्या हो जाती है। प्रेम का सिद्धान्त है - समर्पण, देना, बांटना-मांगना या दूसरे से अपेक्षायें नहीं रखना। प्रेम अपने आप में आपकी अपेक्षायें पूरी करता है क्योंकि सेवा, सुश्रूषा प्रेम के उपउत्पाद हैं, प्रतिफल हैं। हमारे द्वारा पैदा की गई अपेक्षायें या मांगों की कोई सीमा नहीं होती। हर आदमी का ध्यान प्रेम की तुलना में अपेक्षाओं पर अधिक होता है (अर्थात दूसरा मेरे लिये यह करे, वह करे)। परन्तु सच्चा प्रेम हमेशा अपेक्षा रहित होता है। उसकी कोई मांग नहीं होती। इसलिये उसमें आनन्द होता है और यह बात मैं आदर्शवाद के रूप में या किताबी बातें नहीं कर रहा हूं बल्कि अपने दाम्पत्य जीवन में इसका अनुभव कर के बता रहा हूं। यदि पति-पत्नी को एक दूसरे से प्रेम का प्रतिफल नहीं मिल रहा है तो इसके अर्थ हैं कि कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ जरूर है। सम्राट की तरह जीना है तो सिर्फ बांटों, मांगो मत और भिखारी व दुखी होकर जीना हो तो अपेक्षाओं को बढ़ाते रहो।

uuy>dfv kdivql Sp,ve

मैं जीवन को जैसा जी रहा हूं, वैसा बता रहा हूं, यह बातें कोई महात्मा नहीं बता सकता। यह सब मैंने जीवन में झांक कर देखा है, स्वयं अनुभव किया है। पुरुष होकर भी मेरी यह कोशिश रही कि स्त्री के उत्थान के लिये कार्य हो। इसीलिये शादी के बाद सविता के विकास के लिये पूरी सुविधायें देने का प्रयत्न किया। हम दोनों का साथ बचपन से ही हो गया था। एक ही क्षेत्र में रहे, खेले-कूदे, इसलिये सविता का विकास खुल कर हुआ। उसने अपने को हर परिस्थिति में खूबसूरती से ढाला तथा अपने गुणों का विकास किया। यही कारण है कि **आज सविता की मुझसे अलग अपनी एक पहचान है, अपना अलग व्यक्तित्व है। समाज में अपने कार्य क्षेत्र में एक अलग मांग है।**

प्रश्न : आप दोनों प्रेमपूर्ण और शांत है। ऐसा लगता है कि आप एक दूसरे के बिना जी नहीं सकते?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : जहां तक संभव होता है हम एक दूसरे के साथ रहते, उठते-बैठते, जागते-सोते हैं। प्रशिक्षण देने के समय भी साथ रहते हैं। अकेले रह जायें तो लगता है कि हम एक-दूसरे के बिना नहीं रह सकते। मैं बंगलौर कुछ दिन पहले चला गया था तो वहां लोगों ने सविता से कहा कि आप इन्हें अकेला नहीं भेजा करो।

% rv q D n q e s a g

प्रश्न : पति-पत्नी के बीच इतना सुन्दर और प्रेम भरा संबंध आज के युग में एक आश्चर्य से कम नहीं। इसका कोई न कोई मूल आधार या नींव जरूर होगी, वह क्या है?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : "असल में हम दोनों का शुरू से यह प्रयत्न रहा कि दूसरे से बिना कुछ पाने की आशा किये उसकी खुशी और उन्नति के लिये अच्छा-से-अच्छा क्या कर सकते हैं, वह करते रहें, दुःखदायक अपेक्षाओं से मुक्त रहें।" हमारी मित्रता के प्रारम्भ से ही मैं जब उसे खुश देखता था तो मुझे भी खुशी महसूस होती थी। इसी तरह वह भी मुझे सुखी देखकर सुख अनुभव करती थी।

प्रश्न : क्या पत्नी के रूप में उन्होंने आपसे कोई अपेक्षायें या मांग नहीं की?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : जब आपका पत्नी के प्रति प्रेम सच्चा होता है और आप उसकी सुविधा और संभाल भली प्रकार करते हैं तो यह सब पत्नी को अपने आप अपेक्षा रहित कर देता है। जब पत्नी के व्यक्तित्व को, स्वतंत्रता को, गुणों को, स्वभाव को आप स्वीकार करते हैं, सम्मान करते हैं, प्रोत्साहन देते हैं और जिस तरह वह विकसित होना चाहती है, उसमें आप पूरा सहयोग देते हैं तो वह आपसे क्यों कोई अपेक्षा या मांग रखेगी। सौभाग्यवश सविता ने आज तक अपने मुंह से कुछ नहीं मांगा, न जेवर, न साड़ी और न अन्य कुछ। जो भी है उसमें वह सन्तुष्ट रहती है और परमात्मा की कृपा से वह आवश्यकतानुसार है।

n v q r k f n Z d k S e g

प्रश्न : सामान्यतः अधिकतर महिलायें पति के सामने कुछ-न-कुछ मांगे रखती रहती हैं। उनके द्वारा ऐसी मांगे न रखने का कारण क्या और कुछ तो नहीं?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : हां, है, जीवन के प्रति एक गहरी जागरूकता और आनन्द के मूल स्रोत को पहचानने की अन्तर्दृष्टि। सविता इस सत्य से परिचित रही हैं कि दिखावा करना, अहंकार और दुःख का निर्माता है। उनमें अपनी कोई छवि बनाने की भी रुचि नहीं है, बस वह सहज स्वभाव में रहती हैं। अधिकांश महिलाओं में दूसरों से स्पर्धा करने, प्रतियोगिता करने की स्पर्धा रहती है वह उनमें बिल्कुल नहीं है। उन्हें आवश्यकता से अधिक रखने की चाह भी नहीं। उन्हें इस सत्य का गहरा आत्मानुभव हो चुका है कि धन, यश, संग्रह, रौब-दाब आनन्द के स्रोत नहीं वरन् दुख के स्रोत हैं। इसीलिये अनावश्यक मांगों के बारे में उन्होंने कभी विचार तक नहीं किया।

जिस महिला को आत्मस्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सच्चा प्रेम प्राप्त हो जाता है उसे एक महान तृप्ति का अनुभव हो जाता है फिर इन मांगों का उसके लिये कोई अर्थ नहीं रह जाता।

k k S H k o r H e k S o g L

प्रश्न : क्या आपके 21 साल के वैवाहिक जीवन के दौरान कोई वाद-विवाद या मतभेद नहीं हुआ?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : वैचारिक मतभेद निश्चित है, यह स्वाभाविक है, प्राकृतिक नियम है। यदि हम प्रत्येक को वैचारिक अभिव्यक्ति की पूरी स्वतंत्रता दें तो मतभेद हरेक व्यक्ति के बीच होता है। यदि व्यक्ति पति या मालिक की तरह पत्नी का दमन नहीं करे तो उसके भी अलग विचार और मान्यतायें होंगी। जब पत्नियां पति के सामने हर बात के लिये 'हां जी' - 'हां जी' करती हैं जैसा कि एक नौकर मालिक के सामने करता है तो वह सच्चाई नहीं एक मजबूरी होती है।

हर व्यक्ति का अपना अलग दृष्टिकोण होता है जो उसके पूर्व जन्म, परिवार तथा समाज के संस्कारों के कारण होता है। पत्नी में अपनी अनुकूलता खोजने की बजाय अगर हम उसके अस्तित्व-व्यक्तित्व को स्वीकार करें तो झगड़े की जड़ समाप्त होनी शुरू हो जाती है। यह बात पति-पत्नी दोनों पर लागू होती है।

r d i ; v U ka u es

दूसरा कारण यह है कि मैं विचार करता हूं कि दूसरा व्यक्ति मेरी मान्यताओं को क्यों माने और क्यों मैं उसको मनवाना चाहता हूं। मनवाने का अर्थ है अपने विचारों/इच्छाओं को थोपना। जहां थोपना या आरोपित करना होगा वहां या तो दमन होगा या झगड़ा। तब प्रेम और शांति का सवाल ही नहीं पैदा होता।

समस्या वहां पैदा होती है जहां पति या पत्नी एक दूसरे के बारे में यह सोचना शुरू करते हैं कि उसका स्वभाव ऐसा होना चाहिये, विचार ऐसे होने चाहिये आदि। मैं ऐसा नहीं सोचता। मैं इस प्रकार देखता हूं कि उसका स्वभाव ऐसा है तो उसको सकारात्मक रुख देने के लिये लगातार प्रयास करता हूं और उसका हल समय पर छोड़ देता हूं।

और अगर हम पुरुष अहंकार से मुक्त रहें तो स्त्री के सुझाव बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। पुरुष/पति उनको अक्सर उस भावात्मक या व्यवहारिक कोण से नहीं देख सकते।

सच्चा प्रेम चुनाव नहीं करता, पूर्ण स्वीकृति करता है अर्थात् जीवन साथी / संगनी जैसी भी है उसे सहर्ष स्वीकार है। चाहे वह उसका स्वभाव हो या आदत।

शादी की शुरुआत के दिनों हम दोनों में मामूली वैचारिक मतभेद थे। लेकिन धीरे- धीरे हम एक-दूसरे को समझते गये। हमने निष्पक्ष दृष्टि से वास्तविक समस्याओं को देखा और हमारे यह मतभेद भी मिटते गये। आज हम दोनों के बीच 90 प्रतिशत वैचारिक सामंजस्य है। सविता ने यह सामंजस्य मुझे पति समझ कर रोज की किट-किट से बचने के लिये नहीं किया वरन् सत्य का अनुभव होने पर किया। पति-पत्नी को एक दूसरे के स्वभाव और समझ की सीमाओं को स्वीकार करके चलना पड़ता है क्योंकि **प्रत्येक आदमी की**

वैचारिक गहराई एक–सी नहीं होती। इस तथ्य को नहीं समझने से ही झगड़े की शुरुआत होती है।

प्रश्न : आप स्त्री को कितना समझ पाये हैं?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : मैंने ऐसा अनुभव किया है कि स्त्री को भगवान भी नहीं समझ पाये, कारण यह है कि "स्त्रैण चरित्र" वह भी पुरुष के ठीक विपरीत स्वभाव का है। किसी भी पुरुष को स्त्री के स्तर पर आकर निर्णय करने के लिये अपने आपको तैयार करना पड़ता है। दोनों यदि एक दम विपरीत स्वभाव होकर भी अगर प्रेमपूर्ण होकर जी रहे हैं तो वह इस बात का सबूत है कि दोनों ने अपने अहंकार को त्याग कर एक दूसरे की वास्तविकता को समझा है।

p k k t c k g g S q t g

प्रश्न : क्या आपमें पुरुष–अहंकार नहीं है?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : शादी के बाद मैंने एक प्रतिशत भी पति/पुरुष अहंकार अपने पर चढ़ने नहीं दिया। मैंने यह कभी नहीं समझा कि यह काम स्त्री का है और यह काम पुरुष का। एक प्रेमी की दृष्टि से अपनी पत्नी (प्रेमिका) को पूर्ण सहयोग देने की कामना से घर का प्रत्येक काम किया है, चाहे वह झाड़ू लगाने का हो, बरतन साफ करने का, खाना बनाने का, कपड़े धोने का, बच्चों को देख–रेख का अथवा अपने घर को सुन्दर बनाने का। मैं आज भी घर के हर काम में रुचि रखता हूं।

मूल बात यह है कि ज्यादातर पति यह समझते हैं कि घर का प्रत्येक काम स्त्री का है। पत्नी को छोटी–छोटी बातों पर डांटने में 10–20 मिनट लगा देंगे, कहेंगे कि कपड़े, कमरे या भोजन ठीक क्यों नहीं है। जबकि सही समझ यह है कि सभी काम हमारे है, हमारे घर के हैं और मैं स्वयं इसे कर लूंगा। पत्नी के करने का इतंजार न करें।

ka r i d k k vh z / g S l u g

प्रश्न : अधिकांश परिवारों में पति–पत्नी के बीच आर्थिक मामलों को लेकर झगड़े होते रहते हैं परन्तु आपके साथ ऐसा क्यों नहीं है?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) :**पहली बात यह है कि सविता और मैं इस सत्य को बहुत गहराई से समझे हुये हैं कि आनन्द तथा प्रेम का स्रोत धन नहीं है। इसलिये हमने धन को उसकी आवश्यकता के अनुसार ही, एक साधन की तरह महत्व दिया है।** यही कारण है कि वैवाहिक जीवन के प्रारम्भ में हमनें 300 रूपये प्रति माह में एक कमरे का एक कोना किराये पर लेकर मुम्बई जैसे महानगर में बहुत मस्ती और आनन्द से जीवन जिया। सविता का यही दृष्टिकोण हमारे बीच आर्थिक झगड़े नहीं होने का कारण है। **दूसरा कारण है–दुनियां को दिखवाने के लिये, अपनी प्रतिष्ठा जमाने या रुआब झाड़ने के लिये हमने कभी–भी धन या यश का प्रयोग नहीं किया क्योंकि हम दोनों इस बात से परिचित रहे हैं कि ऐसे कामों से केवल अहंकार बढ़ता है और दुख मिलता है।**

हमारे जीवन का सबसे बड़ा रहस्य है – निरहंकारिता (अहंकार नहीं होना) और इसके साथ जीवन में आनन्द के सच्चे स्रोत से संबंध बनाये रखना और आडम्बर से बचना। सविता के हृदय में भारतीय मूल्यों के संस्कार है, भारतीय नारी के संस्कार हैं। इसलिये आज यह जीवन के सर्वोच्च शिखर पर होकर भी एक सामान्य महिला की तरह कर्मठ और समर्पित सहज जीवन जी रही है।

हमारे आपसी मधुर संबंधों का एक कारण यह भी है कि **आज सविता जहां एक ओर पूरी तरह प्रोफेशनल लाइफ जी रही है और बहुत अधिक व्यस्त रहती है पर इसके बावजूद भी घर–परिवार की जिम्मेदारी के प्रति भी पूरा ध्यान देती है।**

प्रश्न : अधिकांश पति अपनी माता और पत्नी की मांगों के बीच दबे रह कर मानसिक संघर्ष का शिकार बन जाते हैं। इसका क्या समाधान हैं?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि मां–बाप ने अपने निस्वार्थ प्रेम के कितने गहरे संस्कार अपने बच्चों पर डाले हैं। बच्चों में, जवान होने पर वही यादें उन्हें अपने माता–पिता की ओर स्वाभाविक रूप से आकर्षित करती हैं जो उन्हें निस्वार्थ प्रेम की मिली होती हैं। इसके अलावा घर की बहू अपने माता–पिता से जो संस्कार लाई है उसका भी बहुत प्रभाव पड़ता है। परिवार का आर्थिक, समाजिक और सांस्कृतिक स्तर भी उसके सदस्यों के आपसी संबंधों पर प्रभाव डालता है।

सच्चा प्रेम कभी इतना कमजोर नहीं होता कि किसी को बांध भी नहीं सके। अधिकतर माता–पिता अपने बच्चों के साथ प्रेम करते हुये जरूर दिखते हैं परन्तु वह वास्तविक न होकर हिसाबी–किताबी प्रेम होता है। जो मां–बाप बच्चों से भावी अपेक्षायें रखते हुये उन्हें पालेंगे उन्हें सिवाय दुख के कुछ नहीं मिलेगा। हम भी अपने बच्चों को पाल रहे हैं इस भावना के साथ पाल रहे हैं कि ये ईश्वर द्वारा भेजे मेहमान हैं, हमें इन्हें पूरे प्रेम से पालना है और फिर आकाश में उड़ा देना है। हम भविष्य का एक प्रतिशत भी हिसाब अपने दिमाग में रख कर उनका लालन–पालन नहीं कर रहे। अधिकतर बच्चों को बड़ा होने पर पिता के बारे में जो यादें आती हैं वे उसके रौब–दाब, अपने विचार थोपने, उसकी अभिव्यक्तियों को दबाने, सज़ा देने आदि की होती हैं। जब माता–पिता उस पर अपनी इच्छायें और विचार थोपने की कोशिश करते हैं तो ऐसी हालत में बच्चा बड़ा होने पर माता–पिता से छुटकारा पाने की कोशिश करेगा ही।

माता–पिता को सुखी रहना है तो :–

1. पैदा होते ही बच्चों को कभी यह समझ न दें कि आपका कमाया धन उनका ही है, उनको शुरू से ही आत्मनिर्भर बनायें।

2. शादी होते ही माता–पिता, बेटे–बहू को परिवारिक तौर–तरीके, खान–पान, व्यवहार की पूरी समझ देकर उनके हाथों में सारी जिम्मेदारी सौंप दें। और मस्ती से एक कमरे में जाकर आराम से अपने जीवन को जीयें और बाहर बोर्ड लगा दें "परामर्श रूम" अगर बेटे–बहुओं को कोई समस्या के लिये सुझाव की आवश्यकता हो तो वह मां–बाप से संपर्क कर लें। परन्तु माता–पिता खासकर सास अगर अपना अधिपत्य, अपने विचार पहले की तरह बेटे–बहू पर थोपती रहेगी, दखलअंदाजी करती रहेगी तो ऐसे घर में शांति, प्रेम, आनंद की कोई संभावना नहीं है और इसके लिये माता–पिता जिम्मेदार है।

बेटे का नये परिवार (बहू) के प्रति झुकाव स्वाभाविक है अगर कोई मां–बाप इसे सहज प्राकृतिक नियम जानकर स्वीकार नहीं करते उनका दुःखी होना स्वाभाविक है।

जो बेटे भूतकाल (माता–पिता) को अधिक महत्व देकर भविष्य (बीवी–बच्चे) को कम महत्व देते हैं उनका परिवार का दुःखी होना स्वाभाविक है। दोनों को संतुलित ध्यान देना चाहिये, कम–ज्यादा नहीं।

माता–पिता को आत्मनिर्भर रहकर अपना सन्मान स्वयं बनाना चाहिये, मांगना नहीं चाहिये, परिवार को अहंकार के बजाय सहयोग दे तो ही शांति संभव है।

प्रश्न : जो लोग प्रेम विवाह करते हैं अक्सर 90 प्रतिशत उसमें असफल विवाह है। परन्तु आप दोनों तो सफलतम प्रेम विवाह के साक्षात् उदाहरण हैं, ऐसा क्यों?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : प्रेमी–प्रेमिका शादी के पहले वास्तविक पारिवारिक उत्तरदायित्व, आर्थिक उत्तरदायित्व 24 घंटे रोजमर्रा की जीवन की समस्याओं से नहीं जूझते इसके कारण दोनों अपने वास्तविक रूप में एक–दूसरे के सामने नहीं आते। यह स्वरूप शादी के बाद सामने आता है। प्रेमी–प्रेमिका के बीच, मेरी मान्यता, मेरे विचार, मेरे स्वाद जैसे शब्द नहीं होते जो शादी होते ही शुरू हो जाते हैं। यूँ समझ लें कि शादी के बाद झूठ का पर्दा या बनावटीपन या भ्रमजाल टूट जाता है इसके कारण प्रेम विवाह असफल हो जाते हैं।

दूसरी बात आज हम क्या–क्या भाव लेकर शादी करते हैं वह भी महत्वपूर्ण है अगर एक पति यह सोचकर शादी कर रहा है कि एक स्त्री आयेगी जो मेरा मन बहलायेगी, सेक्स की तृप्ति करेगी, घर की सफाई करेगी, खाना बनायेगी, सारा घर का काम संभाल लेगी, घर के परिवार के सदस्यों की देखभाल कर लेगी तो सच पूछा जाये तो यह प्रेम आधारित विवाह न होकर आवश्यकता आधारित विवाह है। जहां प्रेम का सवाल ही नहीं पैदा होता। प्रेम का आडंबर हो सकता है। वास्तव में ऐसे विवाह एक शाही नौकरानी को घर में लाने की व्यवस्था है।

इसमें कोई शक या सन्देह नहीं कि स्त्री का कार्य घर–परिवार की संभाल भी करना है परन्तु यह कार्य प्रेम से पैदा न होकर, मजबूरी से पैदा होता है, की करना पड़ेगा समझकर किया जाता है। घर के कार्य एवं परिवार के सदस्यों की देखभाल दोनों की समान जिम्मेदारी है। शादी का मकसद एक दूसरे का सच्चा सहयोगी होना है, गाय की तरह बांधकर केवल काम करवाना नहीं, तभी आनंद फलित होगा।

R h S i k t sk Hh s ku
kk kk ss e; g[ek Sg q g g

प्रश्न : अगर आपकी पत्नी अनपढ़ होती या पुराने विचारों की होती या झगड़ालू स्वभाव की होती या रेकी से हटकर दूसरे प्रोफेशन में होती तो आप क्या करते?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : प्रत्येक स्थिति के अपने–अपने फायदे हैं, हानि हैं। मैं इसलिये नहीं कहता कि ऐसी स्थितियों से लाभ उठाना या हानि उठाना हमारे हाथ की बात है। जैसे सुकरात नालायक पत्नी से भी आध्यात्मिक ऊँचाइयों को और ज्यादा गहराई से छू सकें। वास्तव में गलत और नालायक लोग ही समाज के आध्यात्मिकता की ओर शीघ्र जाने की अप्रत्यक्ष प्रेरणा देते हैं, अच्छे लोग नहीं, क्यूंकि ठीक विपरीत अवस्था ही आपकी वास्तविकता का परिचय देती है। सीधे सज्जन के सामने आप शांति महसूस करते होंगे, क्रोध नहीं आता होगा परन्तु ये सत्य नहीं है, अवस्था है। आप इससे भ्रमित हो सकते हैं, विपरीत अवस्था में आप शांत हैं, क्रोधित नहीं हो रहे हैं तो ही वह सच्चाई मानी जायेगी।

इसलिये अगर मेरी पत्नी नालायक होती तो मुझे शीघ्र आध्यात्मिक होने में या मेरी सच्चाई परखने में बहुत सुविधा होती, जीवन के दूसरे अनुभव, नये आयाम होते क्यूंकि ग़लत से सही निचोड़ना मेरा स्वभाव है मैं उसमें भी जीवन के रंग ढूंढ लेता।

हम हर जहन्नुम को जन्नत में बदल देते हैं
इसलिये खुदा भी डरता है मुझको जहन्नुम में भेजने को

अनपढ़ होती तो सीधी होती, उसको गधे की तरह हाँक-हाँक कर घोड़ा बनाना पड़ता, परन्तु अनपढ़ महिलाओं का तार्किक दिमाग विकसित न होने के कारण भावनात्मक दिमाग का लाभ अधिक मिलता जो अक्सर पढ़ी लिखी महिलायें खो देती हैं। उसकी रेकी अवश्य प्रबल होती क्यूंकि अनपढ़ अधिकतर अंधश्रद्धालु होती हैं।

और अगर दूसरे व्यवसाय में होती तो मुझे अपना स्त्रैण (भावनात्मक) जीवन ज्यादा प्रबल करना पड़ता, जो मैं सविता की मौजूदगी के कारण ध्यान नहीं देता, अंततः जो भी स्थिति हो आनंद लेना या उससे दुःखी होना हमारा चुनाव है।

ऐसा होता तो इस तरह होता। वैसा होता तो उस तरह होता।।

मुझको तो होने से मतलब। कुछ-न-कुछ तो जरूर होता।।

st D e k s s u r Sl ç sk;U s g

प्रश्न : सैक्स के संबंध में आपकी क्या धारणा हैं?

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : मैं सैक्स (काम) को परमात्मा का दिया हुआ सर्वश्रेष्ठ वरदान मानता हूं। इसको पूजा के रूप में पवित्र भाव से देखना तथा समझना चाहिये और आवश्यकतानुसार पूरा उपभोग करना चाहिये। इससे भागने की आवश्यकता क्या है। केवल सैक्स से प्रेम नहीं पैदा होता, बल्कि प्रेम से सैक्स पैदा होना चाहिये। जब प्रेम से सैक्स पैदा होता है तब ही वह वासनात्मक या स्वार्थ पर आधारित न होकर पवित्र और पूज्य होता है।

प्रश्न : परन्तु अधिकतर भारतीय महिलायें सैक्स के प्रति क्यों उदासीन होती है।

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : जब तक महिलाओं के हृदय में अपने पति के प्रति एक गहरा सम्मान एवं प्रेम पैदा नहीं होता तब तक सैक्स के प्रति उनका उदासीन रहना बिलकुल स्वाभाविक है। स्वस्थ सैक्स संबंध तभी संभव हैं जब महिला के गुण, व्यक्तित्व और स्वतंत्रता का पति द्वारा पूर्ण सम्मान होता है तथा वह उसे एक मशीन की तरह अपनी प्यास बुझाने या अपने तनाव मुक्ति का विकल्प बनाकर उसका उपयोग नहीं करता तो ऐसी महिला अपने पति के प्रति क्यों न प्रेमपूर्ण होगी।

S ã yd ake z q h{ aac d gi ws

प्रश्न : आप दाम्पत्य जीवन में सैक्स का कितना और कब तक उपयोग करना ठीक समझते हैं। हमारे सभी आध्यात्मिक गुरु ब्रह्मचर्य पर बेहद जोर देते हैं।

उत्तर (डॉ. एन. के. शर्मा) : इस संसार में अच्छा-बुरा, पाप-पुण्य कुछ नहीं होता केवल सदुपयोग या दुरुपयोग होता है। सैक्स तो ईश्वर प्रदत्त एक महान ऊर्जा है, दाम्पत्य जीवन में इसका जीवन पर्यन्त उपयोग स्वास्थ्यवर्धक है। मैं ब्रह्मचर्य के पक्ष में बिलकुल नहीं हूं। क्योंकि सहज घटे तो ब्रह्मचर्य अन्यथा दमन, जिसका परिणाम अत्यन्त घातक है। मैंने अपने जीवन में जितने बड़े महात्मा, साधु-सन्यासी, ब्रह्मचारी देखें हैं उनमें से अधिकांश महाअहंकारी, महाक्रोधी और महारोगों से ग्रस्त रहे हैं। सैक्स को कभी अपराध भाव से न लेकर शरीर की एक प्राकृतिक आवश्यकता के रूप में सम्मान देना चाहिये। इसका सदुपयोग करना चाहिये, दुरुपयोग नहीं।

मेरा अपना निजी अनुभव है कि सैक्स के सदुपयोग से ही व्यक्ति अहिंसात्मक, शांत, प्रेम पूर्ण और ऊर्जावान बनता है। यही नहीं वरन् वह अनेक रोगों से मुक्त रहता है।

k k M r Z okk f.e l

प्रश्न : आपके विचार से सफल-सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये सबसे आवश्यक बात क्या है?

उत्तर (डॉ. सविता शर्मा) : मेरे विचार से **पति-पत्नी में एक दूसरे के प्रति दृढ़ विश्वास होना और एक-दूसरे के स्वभाव की समझ होना सबसे अधिक आवश्यक बातें हैं।** यदि ये बातें हैं तो शेष सभी विवाद और समस्यायें प्रेमपूर्वक हल हो जाते हैं और दाम्पत्य जीवन सफल तथा सुखी बना रहता है।

आपसी मतभेद होना स्वाभाविक है परन्तु उन्हें शांतिपूर्वक बैठ कर आपसी बातचीत से सुलझाना चाहिये। जब एक-दूसरे से सच्चा प्रेम हो तभी शादी करनी चाहिये। शादी के बाद पति-पत्नी के अहंकार आपस में टकराते रहते हैं परन्तु जिन दम्पतियों में प्रेम होता है वहां उनमें अहंकार या तो कम होता है या बिलकुल नहीं। इसके फलस्वरूप उनके आपसी मतभेद आसानी से बातचीत द्वारा हल होते रहते हैं।

s j k o l s t s l S
u sb rhl haIpc rhfPl

प्रश्न : क्या आपने अन्य स्त्रियों की तरह डाक्टर साहब के सामने रुपये, पैसे, जेवर आदि की मांगें नहीं रखीं?

उत्तर (डॉ. सविता शर्मा) : मुझे अपने माता-पिता से ऐसे संस्कार मिले कि मैं शुरु से अपने में तृप्त अनुभव करती रही। कुछ मांगने

के बारे में मैंने सपने में भी नहीं विचार किया। **सोना–चांदी, जेवर, रूपये–पैसे इन सबसे सच्ची तृप्ति नहीं मिलती, यह मैं शुरू से अनुभव करती आई हूं।** मुझे पूरी स्वतंत्रता, सम्मान और प्रेम मिला है। और मैंने भी यही डाक्टर साहब को दिया है। इसके सामने धन–दौलत तो धूल के समान है। हम दोनों में शुरू से आपसी समझ रही, जीवन में जो भी मिला उसे हम लोगों ने सहर्ष स्वीकार किया, दोनों ने मिल कर जीवन में आगे बढ़ने के लिये संघर्ष किया और एक–दूसरे की सराहना की। जब कभी वैचारिक मतभेद पैदा हुये हमने उन्हें आपस में मिल बैठ कर शांतिपूर्वक हल कर लिया, कभी लड़ाई की नौबत ही नहीं आई

माता–पिता को लड़ाई–झगड़े से हमेशा दूर रहना चाहिये क्योंकि इसका खराब असर उनके दाम्पत्य जीवन पर ही नहीं वरन् बच्चों पर भी पड़ता है।

परिवार की सारी समस्यायें स्त्री पर पड़ती है। पति को चाहिये कि वह पत्नी का साथ दें, उसे इज्ज़त दे इससे जीवन शांति तथा प्रेम से पूर्ण बनता है। इसके विपरीत जो पति अपनी पत्नी पर हुक्म चलाते हैं वे समस्याओं को सुलझाने के बजाय उन्हें और बिगाड़ देते हैं। ऐसी स्थिति में पत्नी के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भी हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

प्रश्न : आधुनिक दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिये क्या करना चाहिये? आज पति–पत्नियों के झगड़े और तलाक बढ़ते जा रहे हैं।

उत्तर (डॉ. सविता शर्मा) : यह माता–पिता की जिम्मेदारी है कि वे अपने बेटे को ऐसी शिक्षा और संस्कार दें जिससे वह एक योग्य पति बन सके। इसी प्रकार बेटी को भी ऐसी शिक्षा देनी चाहिये कि वह दूसरे के घर में जाकर अपने प्रेम पूर्ण व्यवहार और सेवा से वहां के पारिवारिक जीवन को अधिक सुख–शांति पूर्ण बनाये। सास–ससुर का भी फर्ज है कि वह दूसरे घर से आई बहू से वैसा ही व्यवहार करे जो अपनी बेटी के लिये उसके सास–ससुर से चाहतें हैं।

जहां तक आज के युग में तलाकों के बढ़ने की समस्या का प्रश्न है वह काउंसलिंग और ट्रेनिंग द्वारा ही हल हो सकता है। युवक–युवतियों को शादी से पहले एक दूसरे के विचारों, धारणाओं और स्वभाव को समझने का अवसर मिलना चाहिये। आज की परिस्थितियों में दोनों का मेडिकल टैस्ट होना भी जरूरी है ताकि शारीरिक–मानसिक रोगों, आदि के बारे में पहले से दोनों को पता चल सके। मेरे सामने ऐसे कई केस आये हैं जिनमें तलाक इसलिये हुआ कि पति या पत्नी किसी कठिन रोग से पीड़ित थे। इसके अतिरिक्त जहां तक सम्भव हो विवाह एक जैसी मानसिकता, आर्थिक और सांस्कृतिक स्तर के लोगों में होना चाहिये। इसके साथ ही विवाह से पूर्व युवक–युवतियों को ऐसी सलाहें और प्रशिक्षण देने की भी व्यवस्था होनी चाहिये जिससे वे भावी दाम्पत्य जीवन की समस्याओं को सहर्ष हल कर सकें। पुराने जमाने की तुलना में आज का जीवन कहीं अधिक तीव्र और तनावपूर्ण बन चुका है। युवतियां शिक्षित तथा स्वतंत्र विचारों की होने लगी है लेकिन अधिकांश युवकों की मानसिकता में पुराने जमाने के पुरुष का अहम भाव बना रहता है। इसलिये शादी होने के बाद दोनों के अहम् टकराते हैं और झगड़े तथा अशांति का कारण बनते हैं। अत: शादी से पूर्व भावी पति–पत्नी को छह माह तक सुयोग्य विशेषज्ञों द्वारा प्रशिक्षण दिया जाना बहुत जरूरी हो गया है।

' x kd ve s ks Z
m k k g r d

शादी का अनुभव चाहे मधुर हो या कटु हो इस आग से गुजरे बिना कोई पुरूष या स्त्री अपनी पूर्णता और आध्यात्मिक को उपलब्ध नहीं हो सकता।

आपके कर्म बंधनों के अनुसार स्त्री या पुरूष आपके जीवन में प्रवेश करते हैं और उसके अच्छे–बुरे परिणाम भोगने होते हैं अगर संबंध कटु हैं तो इस पाठ को खुले हृदय से स्वीकार कर ग़लत प्रतिक्रिया करने के बजाय उससे जीवन के सत्य की पहचान करें, क्षमा करें, अपने आप को ऊपर उठाये और आध्यात्मिक ऊँचाईयों की ओर आगे बढ़ते जायें। अगर आप इससे भागे, बचने की कोशिश करेंगे, ग़लत व्यवहार या प्रतिक्रिया करेंगे, दुर्भावना घृणा पैदा करेंगे तो समझ लें की आपने इस ग़लत स्थिति को फिर से नये बीज डालकर पोषण कर रहे हैं और जन्मों–जन्मों तब चलते रहने की तैयारी कर रहे हैं। इसलिये शादी अवश्य करें। उसके अच्छे–बुरे परिणामों को पूरा भोगें, भागें नहीं और धीरे–धीरे और ऊपर उठते जायें, नीचे नहीं गिरें। नीचे गिरे तो भविष्य में और अगले जन्मों तक दु:ख और नर्क का कोई अंत नहीं आयेगा। यह प्रकृति का अटूट नियम है।

स्त्री प्रकृति की सबसे महान शक्ति है। पुरूष से भी अधिक बलवान है। इसका पूरा सम्मान करें।

जहां स्त्रियों की पूजा और सन्मान नहीं होता वहां दु:ख, नर्क और बर्बादी हमेशा के लिये स्थिर हो जाते हैं।

जाहं इनकी पूजा और सन्मान होता है वहां आनन्द, प्रेम और स्वर्ग हमेशा के लिये स्थिर हो जाते हैं।

जहां स्त्रियों का विकास नहीं होता और पूर्ण रूप से उनके गुणों की खिलवट नहीं होती वह समाज या परिवार कभी विकास नहीं कर सकता। ये तो ऐसा ही है जैसे गाड़ी का एक पहिया बड़ा और एक छोटा रह गया हो। स्त्रियों के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास को रोककर हम उनके प्रति परमात्मा की एक पाप, अत्याचार या अपराध कर रहे होते हैं। जिससे हमारा उत्थान कभी नहीं हो सकता।

स्त्री के व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास में ही हमारा उत्थान और पूर्णत्व निश्चित है।

स्त्री-पुरूष के बिल्कुल एक अलग व्यक्तित्व है, बल्कि दोनों अलग-अलग ध्रुव है। बेहोश व्यक्ति जीवन भर उसके इस विपरीत स्वभाव को लड़ता रहता है, कोसता रहता है, भागता रहता है, शिकायत करता रहता है। होशपूर्ण ज्ञानवान व्यक्तित्व स्त्री के विपरीत स्वभाव को प्राकृतिक, परमात्मा की अनुपमकृति स्वभाविक मानकर उसके साथ एक हो जाता है, पूर्ण अनुभव करता है।

स्त्री के इस विपरीत स्वभाव को जब आप स्वीकार नहीं करते हैं तो ही आप कहते हैं कि स्त्री को भगवान भी नहीं समझ पाया या वह जटिल है या अनसुलझी समस्या है या नर्क का द्वार है। इस तरह के ग़लत, भ्रमपूर्ण, अंधे दाबे कर बैठते हैं।

कोई आपकी बात माने, आपके विचार या धारणा या पसंद को चुपचाप स्वीकार कर लें। कोई विरोध नहीं करें, कोई विवाद नहीं करें, तर्क न करें तो ही आप समझते हैं कि वह स्त्री सही है या वह पुत्र सही है। जो विरोध करें, तर्क करे, अपनी पंसद को या विचार का पक्ष को सामने रखे और आप उसको पूरा सन्मान पूर्वक गौर करें तो ही आप सच्चे पति या पत्नि हैं। अन्यथा आप एक शासक है जो केवल अपनी राय -पसंद-धारणाओं को स्त्री या बच्चों पर जबर्दस्ती भय पैदा कर, थोपते हैं। ऐसे व्यक्ति के जीवन में प्रेम, आनंद व स्वर्ग कभी घटित नहीं होता।

d iq Ss jL :n kd r S oo u

स्त्री के नवदुर्गा की तरह नौ स्वरूप है, कभी ममतामयी, कभी अन्नपूर्णा, कभी कामिनी, कभी रौद्र तो कभी चंडिका तो कभी हठधर्मिणी तो कभी प्रेम सेवा की महामूर्ति। स्त्री के इन नवस्वरूपों को समय-समय पर स्वभाविक रूप मानकर पूर्ण स्वीकृति के साथ निर्विरोध आनंद लेते रहें। इन स्वरूपों को कभी गंभीरता से न लें, क्योंकि ये सब परिवर्तनशील हैं। लेट गो करें अन्यथा जीवन नारकीय हो जायेगा।

ये काम स्त्रियों का है और ये काम पुरूषों का है ये भेदभाव जिस घर में है वहां पर स्त्रियों के प्रति प्रेम का भाव न रहकर सूक्षम स्तर पर उसको ऐ शाही गुलाम की तरह उपयोग करने का भाव है। हां अगर स्त्री अनपढ़ है या नौकरी पेशा नहीं है तो निश्चित रूप से घर के काम सभी उसको सौंपे जा सकते हैं। परंतु जहां स्त्री भी कंधे से कंधा मिलाकर काम (व्यवसाय या नौकरी) कर रही है तो इस अवस्था में पति झाड़ू लगाना, खाना बनाना, या कपड़े धोना या बच्चें का मूत्र-शौच उठाना जैसे काम को मेरा काम थोड़े ही है ये तो औरतों का है ऐसा समझते हैं। घर में कपड़े, चादर बिखरे होंगे तो पतिदेव कभी ठीक नहीं करेंगे क्योंकि उनको लगता है कि वह करेगी (स्त्री) अपने आप अगर ऐसा हाल या आपका भाव है तो इसका साफ अर्थ यही है कि स्त्री को आप एक शाही नौकरानी या गुलाम समझते हैं। पत्नी के नाम पर अगर आपको उसके प्रति सच्चा प्रेम है तो आप उसको हम कदम पर इसके बोझ, कष्ट को समझेंगे और आप उसको सहयोग करेंगे। ऐसे घर में हमेशा प्रेम, आनंद, स्वर्ग का बास होगा ही अन्यथा तनाव, घुटन और सूखा जीवन होगा।

जहां सच्चा प्रेम होता है किसी के प्रति भी, उसकी साथी की अपने आप सेवा (केयर) हो जायेगी। जहां पति अपनी सेवा करवाने में ही पुरूशत्व समझता है वहां स्त्री को अर्धांगिनी न कहकर गुलाम कहें तो बेहतर है और पुरूष को उसका शासक और जहां शासन है वहां प्रेम के फल कभी नहीं खिलते।

पति या पत्नि नाराज होकर, झगड़ाकर, डांट-फटकारकर, एक-दूसरे के दिल में भय पैदा कर देते है जिससे दोनों नाटकीय हो जाते हैं। अब जो भी प्रेम, अच्छा व्यवहार या काम करेंगे वह हम इस डर के मारे करेंगें कि करलो अन्यथा घर में हंगामा हो जायेगा। कौन पैदा करता है ये डर? आप स्वयं अपने ग़लत व्यवहार से, आप पति या पत्नि को जर्बदस्ती मज़बूर कर देते हैं कि वह आपकी आवश्यकतानुसार सारा कार्य कर लें। परंतु उस कार्य में प्रेम नहीं होता, आत्मा नहीं होती, एक बनावटी पन होता है, एक भय होता है, एक दबाव होता है। ऐसे भय-दबाव बनावटीपन में सच्चा प्रेम, सेवा या आदर कभी पैदा नहीं होता बस होता है तो सिर्फ एक मज़बूरी। इसलिये ऐसा स्वभाव न बनायें कि सामने वाला साथी सबकुछ डर के मारे आपके काम कर रहा हो- प्रेम के मारे नहीं, ऐसा झूठा जीवन न जीयें।

iL e v d a s

दाम्पत्य जीवन के परमसुख की चाबी यही है कि पति-पत्नि एक दूसरे से कम से कम अपेक्षायें करें। अपेक्षाओं की स्केल जितनी लंबी होगी उतना ही आपका जीवन नारकीय होगा। क्योंकि जीवन में चाहे जितनी सुविधायें, आनंद हो आपकी अपेक्षा की लंबी स्केल हमेशा मापकर इनको छोटा साबित करती रहेगी। पति-पत्नि सारा जीवन अपेक्षा का कटोरा हाथ में लेकर एक भिखारी की रह जीवन के हर पल का सुख रोज खोते चले जाते हैं और इस तरह जीवन सूखा-सूखा निराशामय में बीत जाता है। अगर हम यही भाव के साथ अपने साथी के साथ जीयें कि मुझे इसे प्रेम देना है। मुझे इसके लिये सब कुछ करना है हो सकता है तुम्हारे साथी की अपेक्षा की लंबी स्केल में आपका ये प्रेम, ये सेवा ये कुर्बानीयाँ ज्यादा महत्व न रखती हो परंतु आप अपने प्रति ईमानदार, संतुष्ट, प्रसन्न रहें कि आपनें कोई कमी नहीं रखी। प्रेम, सेवा आपको स्वभाव होना चाहिये, सामने वाले साथी का ऐसा स्वभाव न होने से आप अपना स्वभाव खराब न करें।

kk g et f s e ea k f s

महिलाओं में जब मासिक धर्म(माहवारी) का समय नज़दीक आता है और 40-45 के बाद मेनोपाज(माहवारी बंद होने का समय) आता है तब उसके स्वभाव में डिप्रेशन, चिड़चिड़ापन, बेमतलब का क्रोध, असहनशीलता अजीब-सा व्यवहार जैसे अनेको लक्षण पैदा होने लगते हें जो स्वभाविक है ऐसे समय पति पहले से ही इस स्थिति को भांपकर उसके नकारात्मक परिवर्तन को समझदारी से स्वीकार

कर उसके विरोधा में प्रतिक्रिया न कर, शांत रहकर उसको प्रेमपूर्वक संभालना चाहिये जिससे आप अपने साथी के प्रति सच्चा कर्तव्य निभा रहे होते हैं।

पति–पत्नि में अक्सर तकरार का एक बड़ा कारण बच्चों के प्रति नरम या सख्त रूख अपनाने के कारण होता है इसलिये मां–बाप इस सच्चाई को हमेशा समझकर चलें कि **बच्चे डांट या सख्ती से नहीं एहसास से बदलते हैं।** आप खुद बच्चों में डांट या मारपीट का भय पैदा कर उनको बनावटी एवं झूठा बनाने पर मज़बूर करते हैं, बच्चे बहुत समझदार होते हैं उन्हें प्रेम और एहसास से बदला जा सकता है। आप स्वयं एक अच्छे उदाहरण बनकर उनके जीवन को प्रभावित कर सकते हैं।

स्त्री एक प्रकृति की दूसरी विपरीत शक्ति से जुड़े बिना आत्मा और जीवन का पूर्णत्व कभी संभव नहीं। क्योंकि दो विपरीत ऊर्जाओं का एक होना ही संपूर्ण उपलब्धि है, मोक्ष है। स्त्री चाहे लायक हो या चाहे नालायक हो जुड़ना उससे हर हालत में है क्योंकि अगर स्त्री नालायक है तो भी उस अनुभव से ज्ञानपूर्वक गुजर जाना है। नालायक स्त्री का स्वभाव आपको आध्यात्मिक ऊँचाईयों की ओर ले जाने का श्रेष्ठ साधन होती है कयोंकि हमारी सही आध्यात्मिक प्रगति का मापदंड घोर प्रतिकूल अवस्था है (स्त्री) अगर हम इसमें समतावान, प्रतिक्रिया रहित, स्वीकृत भाव में प्रेम और करूणामय होकर जीते हैं तो ही हमारी वास्तविक प्रगति है। अच्छी स्त्री से सुविधा, आनंद, शांति अनुभव हो सकती है परंतु शीघ्र आध्यात्मिक प्रगति संभव नहीं, आपको अपने प्रगति के बारे में आध्यात्मिक ऊँचाई पर पहुंचने का भ्रम हो सकता है।

स्त्री चाहे जैसी है स्त्री का पूर्ण विपरीत व्यक्तित्व को जीकर, उसके सुख और दुख को भोगकर, समझकर उसके प्रति आदर व प्रेम को जो विकसित करता है वही सच्चा परमयोगी है।

हो सकता है इसमें यह जन्म नहीं तो 2–4 जन्म लग जायें स्त्री के स्वभाव को भोगे बिना, उसको समझे बिना हमारी मुक्ति या पूर्णता की कोई संभावना नहीं है। स्त्री हमारी मुक्ति का परम साधन है। उसको समझें, उसको भोगें (सुखपूर्वक या दुख पूर्वक) और परम ज्ञान को उपलब्ध जायें।